NALANDA OPEN UNIVERSITY

Course : **M.A Psychology, Part-I**

Paper : **Paper-I**

Prepared by : **Dr. (Prof.) Prabha Shukla**
Retd. Professor of Psychology, Patna University and
Chief Co-ordinator, School of Social Sciences
Nalanda Open University

Topic : **मनोविज्ञान की विधियाँ**
(Methods of Psychology)

मनोविज्ञान की विधियाँ
(Methods of Psychology)

1.1 परिचय (Introduction)

प्रस्तुत अध्याय में मनोविज्ञान में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न विधियों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया जाएगा। मनोविज्ञान में व्यवहारों के अध्ययन हेतु जिन-जिन प्रमख विधियों का उपयोग किया जाता है उन सबकी विस्तृत व्याख्या इस अध्याय में की जाएगी। इस क्रम में सबसे पहले प्रयोगात्मक विधि (experimental method) का वर्णन किया जाएगा। इसके अन्तर्गत यह बताता जाएगा कि प्रयोगात्मक विधि क्या है, इसका प्रयोग किस प्रकार किया जाता है तथा इसके प्रयोग से कौन-कौन से लाभ एवं हानियाँ हैं। इस प्रकार प्रयोगात्मक विधि का एक विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया जाएगा।

प्रयोगात्मक विधि की विस्तृत व्याख्या के बाद सर्वे विधि (Survey method) का वर्णन किया जाएगा। सर्वे विधि क्या है, इसका प्रयोग किस प्रकार किया जाता है, इसके कितने प्रकार होते हैं तथा उनका प्रयोग कहाँ कहाँ लाभकारी होता है, सर्वे विधि के प्रमुख दोष क्या-क्या है– इन सबको विस्तृत व्याख्या की जाएगी।

सर्वे विधि की व्याख्या के बाद कालानुक्रमिक विधि (Longitudinal method) का भी सविस्तार वर्णन किया जाएगा। इस विधि की प्रमुख विशेषताएँ क्या-क्या है, इसका प्रयोग कहाँ-कहाँ तथा किस प्रकार किया जाता है तथा इसके प्रमुख गुण एवं अवगुण क्या-क्या हैं–इन सारी बातों से अवगत कराया जाएगा।

इसके बाद अनुप्रस्थ काट विधि (cross-sections method) की भी चर्चा की जाएगी जिसके अन्तर्गत इस विधि की सारी प्रक्रिया, विशेषताएँ एवं लाभ व हानियों को सविस्तार समझाने का प्रयास किया जाएगा।

अध्याय के अन्तिम भाग के रूप में विकासात्मक विधि (Developmental method) की चर्चा की जाएगी। विकासात्मक विधि किसे कहते हैं, इसके द्वारा व्यवहारों का अध्ययन किस प्रकार किया जाता है तथा इसके प्रमुख गुण एवं दोष कौन-कौन से हैं–इस सब की विस्तृत चर्चा की जाएगी।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्याय मनोविज्ञान में व्यवहार के अध्ययन की प्रमुख विधियों को प्रस्तुत करने का एक सफल प्रयास होगा जिसे पढ़कर पाठकगण यथोचित लाभ उठा सकेंगे।

1.2 प्रमुख विधियाँ (Principal Method)

मनोविज्ञान मनुष्य के व्यवहार का विज्ञान है। प्रत्येक विज्ञान में उसकी विषय सामग्री के अनुरूप अध्ययन की कुछ विशिष्ट पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। विषय सामग्री के अनुसार अध्ययन की पद्धतियाँ भी बदलती रहती हैं। व्यवहार एक जटिल प्रक्रिया ही नहीं है वरन् वह दिन-प्रतिदिन बदलता भी रहता है। कोई भी दो व्यक्ति एक जैसे नहीं हो सकते। इसलिए मनुष्य के व्यवहार का अध्ययन कोई सरल कार्य नहीं है। विज्ञान के विकास के साथ-साथ नई विधियों का आविष्कार हुआ। मनोविज्ञान में अनेक वैज्ञानिक ओर अर्द्ध-वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। इनमें मुख्य पद्धतियाँ निम्नलिखित हैं-

1.2.1 अन्तर्निरीक्षण अथवा अर्न्तदर्शन विधि (Instrospection Method)

1.2.2 निरीक्षण अथवा प्रेक्षण विधि (Observation Method)

1.2.3 प्रयोगात्मक विधि (Experimental Method)

1.2.4 विकासात्मक विधि (Developmental Method)

(i) दीर्घकालीन विधि (Longitudinal Method)

(ii) समकालीन अध्ययन विधि (Cross Sectional Method)

1.2.5 साक्षात्कार विधि (Interview Method)

1.2.6 सर्वे विधि (Survey Method)

1.2.7 वैयक्तिक इतिहास विधि (Case Study Method)

1.2.8 क्षेत्र अध्ययन विधि (Field Study Method)

1.2.1 अन्तर्निरीक्षण अथवा अन्तर्दर्शन विधि (Instrospection Method)

अन्तर्दर्शन विधि को, आत्मगत निरीक्षण एवं अन्तर्निरीक्षण भी कहा जाता है। अन्तर्दर्शन से तात्पर्य है अपने अन्दर देखना अर्थात् अपने अन्तर्मन को देखना। यह आन्तरिक प्रत्यक्ष है। इस विधि में व्यक्ति स्वयं को अनुभूतियों, भावना प्रक्रियाओं से स्वयं के अनुभव का निरीक्षण करता है। इस विधि का अधिकतर प्रयोग संरचनावाद (Structurals), सम्प्रदाय (School) के प्रवक्ता वुण्ट (Wundt) व उनके शिष्य टिचनर (Titchener) ने किया।

टिचनर के अनुसार अन्तर्दर्शन मनोविज्ञान का प्रवेश द्वार है। यह मनोविज्ञानों की मूल विधि है। आत्म निरीक्षण-विधि के द्वारा व्यक्ति अपने मनोभावों (Mental States) एवं अपने मानसिक प्रतिक्रियाओं (Mental Processes) का स्वयं अध्ययन करता है। अतः व्यक्ति स्वाभाविक रूप से

अपनी मानसिक स्थिति का अध्ययन करता है। ऐसी परिस्थिति में जिस विधि का व्यवहार करता है, उसे आत्म निरीक्षण-विधि कहा जाता है।

लेकिन इस विधि के द्वारा प्राप्त परिणाम बदलते रहते हैं। समय में, परिस्थिति में, सम्बन्ध में परिवर्तन होने पर जिस व्यक्ति से मिलना काफी अच्छा लगता था, आनन्द मिलता था, उसी से दु:खी होने लगता है। इस विधि की दूसरी समस्या है सभी व्यक्तियों की प्रतिक्रिया एक समान नहीं होती है। इस विधि की दूसरी समस्या है सभी व्यक्तियों की प्रतिक्रिया एक समान नहीं होती है जिस व्यक्ति से मुझे बात करना अच्छा लगता है। यह जरूरी नहीं है कि दूसरे व्यक्ति का भी यही राय हो। ऐसी स्थिति में प्राप्त परिणाम पर विश्वास करना सही नहीं होता। अत: अन्तर्दर्शन विधि आत्मनिष्ठ (Subjective) और व्यक्तिगत (Prsonal) होती है। इससे प्राप्त परिणाम विश्वसनीय नहीं होने के कारण अवैज्ञानिक कहलाते हैं। अत: इस विधि को अपनी सीमाएं हैं एवं गुण व दोष हैं, उनका अध्ययन करना आवश्यक है।

अर्न्तदर्शन विधि की सीमाएँ (Limitations of introspection Method)

(1) इस विधि से मन की प्रक्रियाओं को प्रत्यक्ष जाना जा सकता है लेकिन इसके आधार पर कोई सामान्य नियम नहीं बनाया जा सकता, क्योकि यह आवश्यक नहीं कि अन्य व्यक्तियों का अनुभव भी वही हो जो एक व्यक्ति विशेष का है।

(2) इस विधि का प्रयोग दूसरी वैज्ञानिक विधियों के निरीक्षण व प्रयोग विधि के साथ किया जा सकता है।

अन्तर्दर्शन विधि के दोष (Demerits of Introspection Method)

(1) इस विधि में व्यक्ति अपनी मानसिक क्रियाओं का स्वयं अध्ययन करता है और एक ही उत्तेजना (Stimuls) की प्रतिक्रिया भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न होती है। इसलिए अन्तर्दर्शन विधि का यह दोष माना जाता है कि इससे प्राप्त अविश्वसनीय व अवैज्ञानिक हैं। अत: अन्तर्दर्शन विधि आत्मनिष्ठ (Subjective) और व्यतिगत (Personal) होती है।

(2) इस विधि का दूसरा दोष जैसा कि व्यक्ति की मानसिक क्रियाएं गतिशील हैं जो बदलती रहती हैं, इसका अध्ययन अस्वाभाविक लगता है। मान लीजिए, कोई व्यक्ति अभी क्रोध में है व आत्मनिरीक्षण करना है। गुस्से के बारे में सोचा जा रहा है लेकिन सोचते-सोचते उसका क्रोध शान्त हो जाता है। इस तरह व्यक्ति अपनी मानसिक स्थिति का निरीक्षण नहीं कर पाता है।

(3) इस विधि का प्रयोग सीमित है। यह सभी प्राणियों पर नहीं किया जा सकता। इस विधि का प्रयोग बच्चों, पागल और पशुओं पर नहीं किया जा सकता।

(4) इस विधि का प्रमुख आरोप मन का विभक्त होना है। एक ही व्यक्ति अनुभवकर्त्ता और निरीक्षक दोनों ही है। अतः व्यक्ति अपना निरीक्षण स्वयं नहीं कर सकता।

अन्तर्दर्शन विधि के गुण (Merits of Introspection Method)

उपर्युक्त दोष होते हुए भी इस विधि के गुण व लाभ भी हैं। वे इस प्रकार हैं–

(1) यह विधि अत्यंत सरल है व इसका उपयोग सभी सामान्य व्यक्ति कर सकते हैं। यह विधि दूसरी वैज्ञानिक विधियों के साथ प्रयोग में लाई जा सकती है। प्रायः प्रयोग विधि में निष्कर्ष को तर्कसंगत व विश्वसनीय बनाने के लिए प्रयोज्य (subjects) का आत्मवृतांत (Introspection Report) ली जाती है।

(2) इस विधि में व्यक्ति स्वाभाविक रूप से अपने मनोभावों का अध्ययन करता है। विधि के कई दोष बताये गये, फिर भी यह स्पष्ट है कि प्रशिक्षण व अभ्यास से उसे अधिक से अधिक लाभदायक बनाया जा सकता है। अतः इस विधि का ऐतिहासिक रूप में ही नहीं बल्कि व्यावहारिक रूप से अब भी महत्व है।

1.2.2 निरीक्षण अथवा प्रेक्षण विधि (Observation Method)

उपर्युक्त अन्तर्दर्शन विधि में व्यक्ति अपने मनोभावों का स्वयं अध्ययन करता है और निरीक्षण विधि में व्यक्ति दूसरों की मानसिक प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता है।

अवलोकन शब्द अंग्रेजी के 'Observation' का हिन्दी रूपान्तर है, जिसका अर्थ देखना, निरीक्षण करना होता है। 'कार्य कारण अथवा पारस्परिक संबंध को जानने के लिए घटनाओं के ठीक अपने उसी रूप में देखना और उनका आलेखन करना अवलोकन (Observation) कहलाता है। पी.वी. यंग के मतानुसार, 'अवलोकन आंखों द्वारा विचारपूर्वक अध्ययन की प्रणाली के रूप में काम में लाया जाता है जिससे कि सामूहिक व्यवहार और जटिल सामाजिक संस्थाओं के साथ ही साथ संपूर्णता की रचना करने वाली पृथक इकाइयों का अध्ययन किया जा सके।'

("Observation is systematic and deliberate study through the eye of spontaneous occurences at the time they occur. The purpose of observation is to perceive the nature and extent of significant interrelated elements within complex social phenomena, cultural patterns of human conduct".)

(1) उपर्युक्त परिभाषा से यह स्पष्ट है कि निरीक्षण एक क्रमबद्ध तथा प्रशासित अध्ययन है जिसमें घटना का ज्ञान आखों द्वारा किया जाता है।

(2) निरीक्षण सदैव उद्देश्यपूर्ण होता है।

(3) व्यक्ति की मानसिक स्थिति का अध्ययन उसकी क्रियाओं के निरक्षण द्वारा होता है।

निरीक्षण के बाद निरीक्षणकर्ता संदर्भित व्यवहारों का अभिलेखन करता है, जिसमें समय, अवधि, आवृति, हाव-भाव आदि को ज्यों का त्यों लिखता है तत्पश्चात् आंकड़ों को संक्षेप में वर्गीकरण कर व्याख्या व विश्लेषण करता है।

निरीक्षण विधि के गुण (Merits of Observation Methods)

(1) यह विधि अन्तर्दर्शन विधि की कमी को पूरा करती है। बच्चे, पागल, पशु आदि अपना आत्मदर्शन नहीं कर सकते। लेकिन इस विधि द्वारा अवलोकन संभव है।

(2) इस विधि की मुख्य विशेषता घटना स्थल पर जाकर वस्तुस्थिति को देखकर सामग्री का संकलन करना है।

(3) इस विधि से घटना का गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन करना संभव है।

(4) निरीक्षण विधि प्रारंभिक स्तर के अध्ययनों में उपयोगी सिद्ध होती है, क्योंकि यह गइन अध्ययन के लिए मार्गदर्शन करती है।

(5) इस विधि को अन्य वैज्ञानिक विधियों के साथ एक सहायक विधि के रूप में भी प्रयोग किया जाता है।

(6) कई बार यह विधि कार्यकारण संबंधों को स्थापित करने में उपयोगी सिद्ध होती है।

(7) निरीक्षणकर्ता जिस रूप में घटनाओं को घटित होते हुए देखता है उसी रूप में उसका विवरण प्रस्तुत करता है। अत: उसकी सूचनाएं अत्यधिक विश्वसनीय होती है।

निरीक्षण विधि के दोष (Demerits of Observation Methods)

इस विधि के इतने गुण होते हुए भी कई दोष हैं। वे इस प्रकार हैं-

(1) इस विधि में निरीक्षणकर्ता अपनी अनुभूति के आधार पर व्यक्ति की क्रियाओं का अध्ययन करता है। अत: पक्षपातपूर्ण होने पर परिणाम की प्रमाणितका सही नहीं रह पाती।

(2) मनुक्ष्य का व्यवहार (Ambiguous) होता है। इसलिए इसकी व्याख्या करने में कठिनाई होती है।

(3) कभी-कभी निरीक्षणकर्ता की ज्ञानेन्द्रियों के दोष अर्थात् सुनने की शक्ति का ह्रास होने व ज्ञानेन्द्रियां आकर्षित तथ्यों से प्रभावित होकर कभी-कभी घटनाओं को सही अर्थों में प्रत्यक्षीकरण नहीं कर पातीं अत: परिणामों में त्रुटि की संभावना रहती है।

(4) निरीक्षण विधि का प्रयोग छोटे समूह पर ही संभव है। इसमें समय, धन व परिश्रम भी अधिाक लगता है।

निरीक्षण विधि के दोष होते हुए भी इनके कुछ दोष दूर किये जा सकते हैं–

(1) निरीक्षक द्वारा प्रशिक्षण व अभ्यास से कुछ दोष दूर किये जा सकते हैं–

(2) निरीक्षणकर्ता को अपनी मनोवृतियों का विश्लेषण कर अपनी पूर्व धारणाओं, पक्षपातों आदि को दूर किया जा सकता है।

(3) व्यवहार का अध्ययन करने के लिए आंतरिक व बाह्य व्यवहार का अध्ययन आवश्यक है। अत: अन्तर्दर्शन व निरीक्षण दोनों विधियों का प्रयोग आवश्यक है। आंतरिक व्यवहार का अध्ययन अन्तर्दर्शन की सहायता से व बाह्य व्यवहार का ज्ञान निरीक्ष्पण विधि की सहायता से संभव है।

उपर्युक्त दोनों विधियां अन्तर्दर्शन एवं निरीक्षण विधियों में उत्पन्न दोषों के निवारण हेतु वैज्ञानिक विधियों व प्रादुर्भाव हुआ। वैसे तो प्रयोगात्मक विधि निरीक्षण विधि का एक अंग है जिसमें निरीक्षण को प्रयोग में लाया जाता है परन्तु प्रयोगात्मक विधि का निरीक्षण नियंत्रित वातावरण (Controlled Situation) में निरीक्षण है।

1.2.3 प्रयोगात्मक विधि (Experimental Method)

प्रयोगात्मक विधि से व्यक्ति की मानसिक क्रियाओं का अध्ययन एक नियंत्रित वातावरण के अन्तर्गत किया जाता है। प्रयोग एक प्रकार का निरीक्षण है जो नियंत्रित वातावरण में किया जाता हैं (Experiment is an observation under controlled situation)

इस विधि में प्रयोगकर्ता प्राणी भी क्रियाओं के प्रभावित करने वाले तत्वों (Factors) का नियंत्रण करता है। वह स्वाभावित रूप से घटित होने वाले प्राणी के व्यवहारों का इंतजार नहीं करता है, बल्कि प्रयोगशाला में कुछ ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करता है जिससे प्रभावित होकर प्राणी व्यवहार करने लगे और वह व्यवहारों का निरीक्षण करके कोई निश्चित, विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त कर सके। प्रयोगकर्ता जानता है कि प्राणी का व्यवहार वातावरण से प्रभावित होता है। वातावरण में किसी भी तरह से परिवर्तन होने पर प्राणी अभियोजन के लिए व्यवहार करना प्रारंभ कर देता है। इस प्रकार प्रयोगकर्ता इस विचार के अनुकूल किसी परिवर्त्य (Variable) या उत्तेजना (Stimulus) को चुन लेता है।

जिस परिवर्त्य या उत्तेजना के अन्तर्गत वह प्रयोग करता है उसे स्वतंत्र परिवर्त्य (Independent Variable) कहते हैं। इस स्वतंत्र परिवर्त्य के अनुकूल प्राणी की क्रियाएं स्वाभाविक रूप में हों उसके लिए प्रयोगकर्ता प्राणी के व्यवहारों को परिवर्तन करने वाले अन्य तत्वों को स्थिर रखता है। इसलिए इन तत्वों (Factors) को 'स्थिर परिवर्त्य' (constant Variables) कहते हैं। 'स्थिर परिवर्त्य' (constant Variables) को नियंत्रित परिवर्तन (Controlled Variables) भी कहते हैं, क्योंकि स्वतंत्र परिवर्त्य के अनुकूल प्रयोगकर्ता इन

तत्वों को नियंत्रित परिवर्तन के द्वारा वातावरण को नियंत्रित (Control) करता है। अत: नियंत्रित वातावरण में 'स्वतंत्र परिवर्त्य के द्वारा प्राणी के व्यवहार में परिवर्तन होते हैं उन्हें आश्रित परिवर्त्य (Dependent Variables) कहते हैं।'

परिवर्त्य (Variables) के प्रकार–

अत: किसी भी प्रयोग (Experiment) में तीन प्रकार के परिवर्त्य (Variable) होते हैं।

(i) स्वतंत्र परिवर्त्य (Independent Variable)
(ii) आश्रित परिवर्तय (Dependent Variable)
(iii) नियंत्रित या अस्थिर परिवर्त्य (Controlled or Constant Variable)

(i) स्वतंत्र परिवर्त्य (Independent Variable) – स्वतंत्र परिवर्त्य उत्तेजक (Stimulus) से संबंधित होते हैं जिनको प्रयोगकर्ता स्वेच्छानुसार प्रस्तुत करता है।

(ii) आश्रित परिवर्त्य (Dependent Variable) – आश्रित परिवर्तय उन परिवर्तनों (Changes) को कहते हैं जो स्वतंत्र परिवर्त्य से उत्तेजित (Stimulated) होकर प्राणी वातावरण में समायोजन के लिए करता है। (Dependent variables are responses of the subjects caused by independent variable) इन्हें आश्रित परिवर्तन इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इनकी उत्पत्ति स्वतंत्र परिवर्त्य पर निर्भर करती है। ऐसी परिवर्त्य प्रयोज्य के व्यवहार होते हैं जो स्वतंत्र परिवर्त्य के फलस्वरूप होते हैं।

(iii) नियंत्रित या अस्थिर परिवर्त्य (Controlled or Constant Variables) – 'स्थिर परिवर्त्य' अथवा 'नियंत्रित परिवर्त्य' वे तत्व (factors) हैं जो स्वतंत्र परिवर्त्य के समान होते हैं और उनके नियंत्रण नहीं होने पर वे प्राणी की क्रियाओं के प्रेरक हो जाते हैं। इसी कारण प्रयोगकर्ता इन तत्वों को स्थिर (Constant) रखता है, उन्हें नियंत्रित रखता है जिससे वे प्राणी की क्रियाओं के प्रेरक न हो सकें और केवल परिवर्त्य के द्वारा क्रियाएं हों जिनका अध्ययन प्रयोगकर्ता अच्छी तरह कर सकें।

मैक्गुइगन (Mc Guigan, 1969) के अनुसार, 'वर्तमान समय में प्रयोगात्मक मनोविज्ञान की परिभाषा में किन्हीं विशेष क्षेत्रों का समावेश नहीं है परन्तु सामान्य रूप से वैज्ञानिक विधि का तथा विशेष रूप से प्रयोगात्मक विधियों का अध्ययन है।' (The present trend is to define Experimental Psychology not in terms of specific content areas, but rather as a study of scientific methodology generally, and of the methods of experimentation in particular).

— F.J. Mc Guigan, Experimental Psychology A Methodological Approach, 1969.

प्रयोगात्मक विधि के चरण (Steps of Experimental Method)

किसी भी प्रयोग में निम्नलिखित पदों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

मैक्गुइगन (Mc Guigan, 1969) ने प्रायोगिक योजना की रूपरेखा में निम्नलिखित पदों का होना आवश्यक बताया है।

लेबल (Label) साहित्य का सर्वेक्षण (Survey of the Literature), समस्या (Problem), परिकल्पना (Sypothesis), चरों की परिभाषा (Definition of Variables), उपकरण (apparatus), चरों का नियंत्रण (Control of Variables), अभिकल्प (Design), समूहों में प्रयोज्य का चयन व निर्दिष्टीकरण (Selection of Assignment of Participants of Groups), प्रयोग प्रक्रिया (Experimental Procedure), प्रदत्तों का मूल्यांकन (Evaluation of the Data), साक्ष्य प्रतिवेदन (Evidence Report), साक्ष्य प्रतिवेदन से परिकल्पना के लिए अनुमान लगाना (Make Inference from the Evidence Report to the Hypothesis), एवं सामान्यीकरण (Generalization).

प्रायोगिक विधि के गुण (Merits of Experimental Method)

प्रायोगिक विधि के गुण अथवा लाभ इस प्रकार हैं–

(1) वस्तुनिष्ठता (Objectivity) – अन्य विधियों की अपेक्षा यह विधि सर्वाधिक वैज्ञानिक विधि (Most Scientific Method) है। इस विधि में प्रयोगकर्ता योजनानुसार निश्चित परिस्थितियों में चरों के संबंध का अध्ययन करता है। इनसे प्राप्त परिणाम विश्वसनीय होते हैं।

(2) कार्य और कारण संबंधों का अध्ययन (Cause and Effect Relation) – इस विधि द्वारा कार्य और कारण का संबंधों का अध्ययन संभव है और कार्य शुद्धता से किया जाता है। इसके साथ ही संबंधों की मात्रा (Quantity) का भी अध्ययन किया जाता है।

(3) प्रमाणीकरण की योग्यता (Varifiability) – प्रायोगिक विधि में प्रमाणीकरण की योग्यता है अर्थात् एक प्रयोगकर्ता द्वारा प्राप्त परिणाम अर्थात् निष्कर्षों को दूसरा प्रयोगकर्ता उन्हीं विधि को अपनाकर दूसरे स्थान पर यदि जांच करते हैं तो परिणाम सदैव समान आते हैं यह परिमाणीकरण का गुण है।

(4) सार्वभौमिकता (Universality) – इस विधि द्वारा प्राप्त निष्कर्ष में सार्वभौमिकता का गुण पाया जाता है अर्थात् कहीं भी किसी स्थान पर निश्चित दशाओं में निष्कर्ष प्राप्त किये जा सकते हैं।

(5) शुद्धता एवं संक्षिप्तता का गुण (Accurate and Precise) – यह विधि अन्य विधियों की तुलना में अधिक शुद्ध व संक्षिप्त है। इस विधि से अध्ययन करने में समय की बचत होती है।

(6) चरों पर नियंत्रण (Control over Variables) – मनोवैज्ञानिक व्यवहार का अध्ययन एक नियंत्रित वातावरण में करते हैं। प्रयोगकर्ता प्रयोगशाला में कुछ ऐसी उत्पन्न

करता है जिससे प्रभावित होकर प्राणी व्यवहार करता है व दूसरे कारकों को नियंत्रित भी करता है।

प्रयोगात्मक विधि के दोष (Demerits of Experimental Method)

उपर्युक्त गुण होते हुए भी इस विधि के कुछ दोष हैं। ये निम्न प्रकार हैं–

(1) **नियंत्रण का अभाव (Lack of Control) –** प्रयोगात्मक विधि में एक व्यवहार विशेष को प्रभावित करने वाले कारकों को नियंत्रित करना होता है। लेकिन इस विधि में भौतिक व रसायन विज्ञानों की तुलना में पूर्ण नियंत्रण संभव नहीं होता, क्योंकि मनोविज्ञान का अध्ययन विषय मानव व पशुओं का व्यवहार है। पूर्ण नियंत्रण के अभाव में विश्वसनीय परिणाम प्राप्त नहीं होते हैं।

(2) **कृत्रिम अध्ययन (Artificial Study) –** प्रायोगिक विधि द्वारा अध्ययन करते समय समस्याओं से संबंधित प्रयोगशाला में कुछ कृत्रिम वातावरण उत्पन्न करना पड़ता है। इस तरह कृत्रिम वातावरण में अस्वाभाविक अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को समान परिस्थितियों में उपस्थित व्यक्तियों के लिए सामान्यीकृत (Generalized) नहीं किये जा सकते। इस प्रकार कृत्रिम परिस्थितियों पर आधारित परिणाम वास्तविक परिस्थितियों पर आधारित परिणामों की तुलना में उतने विश्वसनीय व वैध नहीं होते हैं।

(3) **प्रयोज्य का असहयोग (Non-Cooperation of the Subject) –** कभी–कभी यह पाया जाता है कि प्रयोज्य की रुचि न होने से, सहयोग न करने से भी परिणाम प्रभावित होते हैं।

प्रयोगात्मक विधि में उपर्युक्त दोष आवश्यक हैं लेकिन फिर भी इस विधि का महत्व है; क्योंकि दोषों की तुलना में प्रयोगात्मक विधि के गुण अधिक हैं। यदि इस विधि के दोषों अथवा कठिनाइयों को कम किया जाए तो प्रयोगात्मक विधि हर तरह से वैज्ञानिक विधि है।

1.2.4 विकासात्मक विधियां (Developmental Methods)

विकासात्मक विधियां की सहायता से मानव के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। इन विधियों से बालक के जन्म से लेकर उन अवस्थाओं का अध्ययन किया जाता है जहां तक उस बालक का शारीरिक व मानसिक विकास होता है। व्यवहार और व्यक्तित्व के विभिन्न विकासात्मक पहलुओं का अध्ययन करने के लिए कई विधियां हैं। इन विधियों में से मुख्य दो विधियों का वर्णन निम्न प्रकार किया जा रहा है जो अधिक प्रचलित हैं।

(i) दीर्घकालीन विधि (Longitudinal Method)

(ii) समकालीन अध्ययन विधि (Cross Sectional Method)

जैण्डन (Janden, 1978) के अनुसार, 'यह एक ऐसी शोध विधि है जिसमें वैज्ञानिक व्यक्तियों के एक ही समूह का अध्ययन भिन्न-भिन्न समयों पर उनके व्यवहार एवं उनके गुणों में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर करता है।'

"The Longitudinal method involves a research approach in which the scientist studies some individual at different points in their lives, noting the changes that occur in their behavior and characteristics overtime."

— Zanden : Human Development, 1989

(i) **दीर्घकालीन विधि (Longitudinal Method)–** दीर्घकालीन विधि में बालकों के एक ही समूह का अध्ययन दीर्घ समय तक चलता रहता है। इस विधि में एक ही आयु-स्तर के बालकों के समूह को चुना जाता है। इसी समूह के बालकों की आयु बढ़ने के साथ-साथ उसकी मानसिक, सांवेगिक तथा शारीरिक योग्यताओं के विकास-क्रम का निरीक्षण व मापन किया जाता है। उदाहरणार्थ, अध्ययनकर्ता 6 से 9 वर्ष तक के बालकों के संज्ञानात्मक विकास का अध्ययन करना चाहता है तो उन्हीं बालकों का 6 वर्ष की आयु में परीक्षण किया जायेगा, फिर 6 ½ वर्ष की आयु में, तत्पश्चात् 7 वर्ष, इसी तरह जब बालक 9 वर्ष के हो जायेंगे तक तक उनका संज्ञानात्मक विकास के प्रत्येक पहलू का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला जायेगा, क्योंकि इस विधि में बच्चों का समूह एक ही रहता है अतः प्रतिदर्श (Sample) संबंधी त्रुटियों की संभावना नहीं रहती है।

दीर्घकालीन विधि की विशेषताएं (Characteristics of Longitudinal Method)

उपर्युक्त विवरण से कालानुक्रमिक विधि की कुछ विशेषताएं स्पष्ट होती हैं। ये निम्न प्रकार हैं-

(1) इस विधि में जैसा इसके नाम से स्पष्ट है कि एक ही समूह (एक ही आयु के) व्यक्तियों का किसी प्रत्यय के अध्ययन के लिए उस समूह पर भिन्न-भिन्न अंतराल पर परीक्षण कर जाना जाता है।

(2) अंतराल का निर्णय अध्ययनकर्ता अध्ययन किये जाने वाले प्रत्यय के अनुकूल तय करता है।

(3) इस विधि का प्रयोग अध्ययनकर्ता विभिन्न अंतरालों में परिवर्तन का अध्ययन करने के उद्देश्य से करता है।

(4) इस विधि का प्रयोग सामान्यतः बाल विकास के अन्तर्गत मानसिक विकास में आयु के अनुसार क्या-क्या परिवर्तन होते हैं अर्थात् शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास में क्या परिवर्तन होते हैं का अध्ययन किया जाता है। इसलिए इस प्रकार की विधियों को विकासात्मक विधियां कहा जाता है।

दीर्घकालीन अध्ययन विधि की सीमाएं (Limitations of Longitudinal Method)

दीर्घकालीन अध्ययन विधि की कुछ सीमाएं हैं।

(1) इस विधि से विष्ठोज़ताओं की जानकारी होने के बावजूद विधि की सीमाएं हैं।

(2) अध्ययनकर्ता को परिणाम के लिए वर्ज़ों तक इंतजार करना पड़ता है। इतने लंबे समय में कुछ बच्चे स्कूल अथवा अपना पूर्व स्थान छोड़कर चले जाते हैं।

(3) इस तरह प्रति परिणाम पूर्ण नहीं होते हैं। विष्ठवसनीयता में कमी आ जाती है।

उपर्युक्त सीमाएं होते हुए भी कुछ विष्ठोज़ परिस्थितियों में इन विधियों का प्रयोग आवष्ठयक हो जाता है।

(ii) **समकालीन अध्ययन विधि (Cross Sectional Method)–** समकालीन विधि दीर्घकालीन विधि के बिल्कुल विपरीत है। इस विधि के अन्तर्गत समस्या से संबंधित समूह को चुन लिया जाता है, तत्पष्ठचात् एक ही आयु के अथवा एक ही आर्थिक स्तर को ध्यान में रखकर समूह का चयन किया जाता है। उदाहरणार्थ, में 6 से 9 साल तक की आयु के कुछ मानसिक प्रत्ययों का अध्ययन करना है। तब हम 6 से 9 साल तक के हर वायु के (6, 7, 8, 8) 100, 100 बच्चे अर्थात् 400 बच्चों का प्रतिदर्ष्ठा (Sampling) विधि से चयन कर उनका अध्ययन करते हैं। इस तरह विभिन्न आयु वर्ग में तुलना की जा सकती है। इस प्रकार ष्ठारीरिक मानसिक विकास का अध्ययन किया जा सकता है।

समकालीन विधि के गुण (Merits of Cross Sectional Method)

इस विधि के कुछ गुण निम्न प्रकार हैं–

(1) जैसा कि इसके नाम से स्पज़्ट है कि विभिन्न आयु के बच्चों का एक ही समय में तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं।

(2) इस विधि से विकासात्मक प्रक्रिया का अनुमानात्मक रूप स्पज़्ट होता है।

(3) यह विधि कम खर्चीली है।

(4) इस विधि द्वारा एक ही समय में तुलनात्मक अध्ययन संभव है।

अध्ययनकर्ता की दीर्घकालीन विधि की भांति इंतजार नहीं करना पड़ता।

समकालीन विधि की सीमाएं (Limitation of Cross Sectional Method)

इस विधि के गुण होते हुए भी इसकी कुछ सीमाएं हैं। वे निम्न प्रकार हैं–

(1) इस विधि से प्राप्त परिणाम विकासात्मक प्रक्रिया व वास्तविक प्रतिनिधित्व नहीं करते, बल्कि यह विकासात्मक प्रक्रिया का अनुमानात्मक रूप स्पष्ट करते हैं।

(2) तुलनात्मक अध्ययन शुद्ध नहीं हो सकता, क्योंकि सभी समूहों का अपना स्तर आर्थिक, सामाजिक, मानसिक अलग-अलग होता है।

उपर्युक्त सीमाओं के होते हुए भी विकासात्मक मनोविज्ञान में इसका प्रयोग नहीं रोका जा सकता। विशेष परिस्थितियों में उनका उपयोग करना होता है।

1.2.5 साक्षात्कार विधि (Interview Method)

सक्षात्कार को अंग्रेजी में 'Interview' का नाम दिया जाता है जो कि दो शब्दों से मिलकर बना है। 'Inter + View', जहां प्रथम शब्द 'Inter' का अर्थ है 'आन्तरिक' तथा द्वितीय शब्द 'View' का अर्थ है 'अवलोकन करना'। सामान्य अर्थ में साक्षात्कार से तात्पर्य एक व्यक्ति द्वारा अन्य व्यक्ति से वार्तालाप के द्वारा उसकी योग्यता, ज्ञान आदि की जानकारी प्राप्त करना है।

अन्य शब्दों में साक्षात्कार का अर्थ नियोजित ढंग से कुछ तथ्यों अथवा घटनाओं की आंतरिक विशेषताओं को ज्ञात करके उनके बीच पाये जाने वाले कार्य-कारण संबंध को ज्ञात करना होता है।

इस विधि में कम से कम दो व्यक्ति आवश्यक रूप से होते हैं। इसमें एक अध्ययनकर्ता और दूसरा प्रयोज्य होता है। करलिंगर (Kerlinger), 1974 के अनुसार, 'साक्षात्कार एक आमने-सामने वाली अन्तर्वैयक्तिक भूमिका अर्थात् परिस्थिति है जिसमें एक व्यक्ति, साक्षात्कारकर्ता, दूसरे व्यक्ति, जिसका साक्षात्कार किया जा रहा है उत्तरदाता से उन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करना चाहता है, जिनकी रचना संबंधित शोध कार्य की समस्या के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की गई है। ("The interview is a face to face interpersonal role situation in which one person, the interviewer, asks a person being interview, the respondent, the questions designed to obtain answers pertinent to the perposes of the research problems.")

मनोविज्ञान में इस विधि का प्रयोग स्वतंत्र रूप में व सहायक विधि के रूप में भी किया जाता है। इस विधि का प्रयोग किसी समस्या के संबंध में प्राथमिक सूचना एकत्र करने के लिए किया जाता है।

साक्षात्कार विधि के प्रकार (Types of Interview Method)

1. **संरचित साक्षात्कार या प्रमाणिक साक्षात्कार विधि (Structured Interview or Standardized Interview)-** संरचित साक्षात्कार विधि में पहले ही निर्धारित प्रश्नों की एक सूची की सहायता के प्रयोज्यों से सम्पर्क स्थापित कर उनका साक्षात्कार लिया जाता है। इसमें अनुसूची की शब्दावली व भाषा आदि में कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता, इसलिए इसे नियंत्रित अथवा औपचारिक साक्षात्कार (Formal) कहा जाता है। इस प्रकार के साक्षात्कार का मुख्य उद्देश्य एकरूपता बनाये रखना होता है। इससे प्राप्त अंतरों को वैज्ञानिक आधार पर श्रेणीबद्ध कर निष्कर्ष निकाले जाते हैं।

2. **असंरचित साक्षात्कार अथवा अप्रमाणिक साक्षात्कार (Unstructured Interview of Unstandardized Interview)–** असंरचित साक्षात्कार जैसा कि नाम से स्पष्ट है उत्तरदाताओं से विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछने के लिए साक्षात्कारकर्ता स्वतंत्र होता है। इसी कारण इसे अनियंत्रित (Uncontrolled) अथवा अनौपचारिक (Informal) साक्षात्कार भी कहा जाता है। इस प्रकार के साक्षात्कार में संरचित के विपरीत बिना किसी पूर्व अनुसूची की सहायता से साक्षात्कारकर्ता कुछ मुख्य प्रश्न पूछता है और उत्तरदाता उन प्रश्नों के उत्तर देता है। इस विधि से उत्तरदाता उन प्रश्नों के उत्तर देता है इस विधि से प्रयोज्य को समझने का अधिक अवसर प्राप्त होता है।

असंरचित साक्षात्कार को चार भागों में बांटा जा सकता है–

(i) केन्द्रित साक्षात्कार (Focused Interview)
(ii) नैदानिक साक्षात्कार (Clinical Interview)
(iii) अनिर्देशित साक्षात्कार (Non-directive Interview)
(iv) पुनरावृति साक्षात्कार (Interview Repetitive Interview)

उपर्युक्त चार प्रकार के असंरचित साक्षात्कार का प्रयोग किसी विशेष परिस्थिति में ही किया जाता है।

साक्षात्कार के प्रमुख उद्देश्य (Main Objectives of Interview)

(1) साक्षात्कार के प्रमुख उद्देश्य नवीन प्राक्कल्पनाओं का निर्माण करना, (Formulation of New Hypothesis) साक्षात्कार से भिन्न–भिन्न व्यक्तियों के बारे में उनके विचारों का पता चलता है जिसके आधार पर नई प्राक्कल्पनाओं का निर्माण संभव है।

(2) जिन घटनाओं को हम नहीं देख सकते व जिनका समाधान अन्य विधियों से भी संभव नहीं हैं। साक्षात्कार से अध्ययन किया जा सकता है।

(3) साक्षात्कार की सहायता से व्यक्तियों से प्रत्यख संपर्क कर सामग्री का संकलन करना भी है। ये सूचनाएं प्राथमिक स्तर की होती है।

(4) साक्षात्कार विधि में प्राय: प्रशिक्षित अध्ययनकर्ता होता है जिससे विश्वसनीय सूचनाएं प्राप्त की जाती हैं।

(5) नैदानिक साक्षात्कार की सहायता से व्यक्ति के जीवन इतिहास को जानने के लिए मानसिक रोगियों में वार्तालाप करने के लिए किया जाता है। इसके माध्यम से अनेक अनुभवों को जाना जा सकता है जो किसी व्यवस्था में सुधार करने में सहायक हों।

साक्षात्कार विधि का महत्व (Importance of Interview Method)

(1) साक्षात्कार विधि को एक सहायक विधि के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

(2) इस विधि से भिन्न-भिन्न व्यक्तियों से सूचना प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है। साथ ही साथ गोपनीय अनुभवों तथा घटनाओं की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

(3) इस विधि की सहायता से व्यक्तिगत तथ्यों के अध्ययन में सहायता मिलती है।

(4) इस विधि से सभी प्रकार के व्यक्तियों, बच्चों, बूढ़ों, अशिक्षित आदि से भी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

(5) इसे कर्मचारिचों के चयन प्रक्रिया में भी एक विशेष स्थान दिया जा सकता है।

(6) यदि साक्षात्कार संवेगात्मक पृष्ठभूमि में सम्पादित किया जाता है तो इस विधि से जो सूचना प्राप्त की जाती हैं, वह अन्य विधियों द्वारा प्राप्त नहीं की जा सकती।

साक्षात्कार विधि की सीमाएं (Limitations of Interview Method)

साक्षात्कार विधि के गुण होते हुए भी इसकी कुछ सीमाएं हैं, वे निम्न प्रकार हैं-

(1) साक्षात्कारकर्ता को प्रयोज्य की मौखिक रिपोर्ट पर निर्भर रहना पड़ता है। प्रयोज्य साक्षात्कारकर्ता के सामने अपनी पूरी बात नहीं बोल पाता है।

(2) साक्षात्कारकर्ता की अपनी प्रेरणाएं (Motivation), अभिवृतियां (Attitudes), इच्छाएं (Desires) भी अध्ययन को प्रभावित करती हैं।

(3) सक्षात्कार विधि से शुद्ध व विश्वसनीय जानकारी तब तक नहीं ली जा सकती तब तक कि स्वयं साक्षात्काकर्ता को इस विधि की पूरी जानकारी न हो।

(4) स्थानीय भाषा (Local Dialect) के अभाव में पूर्ण जानकारी संभव नहीं है।

(5) इस विधि का प्रयोग छोटे बच्चों व पशुओं पर नहीं किया जा सकता।

(6) साक्षात्कार का समय यदि कम होता है तो पूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं होती है।

(7) कई बार साक्षात्कार विधि बहुत खर्चीली पड़ती है।

(8) साक्षात्कार विधि द्वारा प्राप्त सूचनाओं में कुछ समय बाद विस्मरण की संभावना रहती है जिससे विश्वसनीयता संभव नहीं होती।

साक्षात्कार विधि में उपर्युक्त सीमाओं के होते हुए भी इसका प्रयोग नितांत आवश्यक है, क्योंकि यह विधि अन्य विधियों के साथ सहायक का कार्य करती है। उक्त सीमाओं को निम्नलिखित सुझावों को ध्यान में रखकर उपयोगी बनाया जा सकता है।

(1) साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण दक्ष मनोवैज्ञानिकों द्वारा करना चाहिए।

(2) साक्षात्कार के समय साक्षात्कार अनुसूची का पालन ईमानदारी, समय व उद्देश्य को ध्यान में रखने से कुछ हद तक इसमें सुधार लाया जा सकता है।

(3) साक्षात्कार विधि में आधुनिक प्रविधि का उपयोग, जैसे- रिकार्डिंग व कम्प्यूटर का प्रयोग कर इसे विश्वसनीय बनाया जा सकता है।

(4) साक्षात्कारकर्ता प्रशिक्षित ही होने चाहिए।

1.2.6 सर्वे विधि (Survey Method)

सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी के सर्वे (Survey) शब्द का हिन्दी रूपान्तर है जो दो शब्दों Sur या Sor = Over तथा Veeir या Veoir = To see से मिलकर बना है, जिसका अर्थ ऊपर देखना अथवा निरीक्षण करना अर्थात् किसी घटना अथवा स्थिति को ऊपर से देखकर अवलोकन करना है। मनोविज्ञान का क्षेत्र विस्तृत है अर्थात् कुछ ऐसी समस्याएं हैं जिसके कारण बहुत बड़े समुदाय का अध्ययन आवश्यक है। अर्थात् इस समस्या के समाधान के लिए सर्वे विधि उत्तम है। एक सामाजिक सर्वे प्राय: व्यक्तियों के एक समूह के किसी समस्यात्मक भाग की अपेक्षा समस्त रचना का एक विस्तृत वर्णन है।

प्राय: सर्वेक्षण जनसंख्या के बजाय प्रतिदर्श (Sample) पर ही किया जाता है। इसलिए इसे प्रतिदर्श सर्वेक्षण (Sample Survey) भी कहा जाता है। करलिंगर (Kerlinger, 1973) के अनुसार, प्रतिदर्श सर्वेक्षण समाजशास्त्रीय तथा मनोवैज्ञानिक चरों की घटना, उसका वितरण तथा उसके आपसी संबंधों को निश्चित करने का प्रयत्न करते हैं। सर्वेक्षण अनुसंधान लोगों की महत्वपूर्ण वास्तविकताओं तथा उनके विश्वासों, मतों, मनोवृतियों, प्रेरणाओं एवं व्यवहारों पर प्रकाश डालता है।

'Sample surveys attempt to determine the incidence, distribution and interrelations among sociological and psychological veriables..... survey and research focuses on people the vital facts of people and their belief, opinion, attitudes, motivations and behavior.'

— Kerlinger, 1973

सर्वेक्षण एक महत्वपूर्ण विधि है। यह विधि जनमत संग्रह की एक महत्वपूर्ण विधि है। इस विधि मे समष्टि से प्रतिनिधि प्रतिदर्श (Sample) का चयन कर प्रतिदर्श के सदस्यों के आवासीय, वैयक्ति, सामाजिक, आर्थिक व मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का मापन किया जा सकता है। तत्पश्चात् प्राप्त प्रदत्तों (Data) के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा निर्धारित किया जाता है कि किसी सीमा तक कौन सी मनोवैज्ञानिक विशेषताएं किन सामाजिक विशेषताओं के साथ संबंधित है।

सर्वेक्षण का उद्देश्य (Objectives of Survey)

सामाजिक सर्वे के निम्न उद्देश्य हो सकते हैं–

(1) **सामाजिक समस्याओं का अध्ययन तथा उनका समाधान करना (Study and Solution of Social Problems)–** अधिकांश सर्वे किसी सामाजिक समस्या के आयामों को मापने, कारणों को जानने तथा उनके समाधान के संबंध में निर्णय लेने के एक प्रथम कदम के रूप में किये जाते हैं।

(2) **समाजिक सिद्धांतों के बारे में जानकारी हो (Verification of Social Theories)-** कभी कभी विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रस्थापित सिद्धांतों की सत्यता का परीक्षण किया जाना आवश्यक हो जाता है। मनुष्य व समाज दोनों ही परिवर्तनशील हैं अत: समय-समय पर उनका पुनर्परीक्षण करना आवश्यक हो जाता है।

(3) **समाजिक तथ्यों का आंकलन (Collection of Social Facts)-** जब कभी सांख्यिकीय आंकड़ों तथा अन्य विधियों से आवश्यक तथ्य उपलब्ध नहीं हो पाते, तब सर्वेक्षण द्वारा तथ्यों का संकलन किया जाता है। जैसे लोगों के रहन-सहन, शिक्षा, सामाजिक दशा, आर्थिक व सामाजिक सुरक्षा आदि के बारे में सामाजिक सर्वे द्वारा सूचनाएं एकत्र की जा सकती है।

(4) **प्राक्कल्पनाओं का निर्माण व परीक्षण (Formulation and Testing of Hypothesis)-** सर्वेक्षणों का उद्देश्य प्राक्कल्पनाओं का निर्माण व उनका परीक्षण करना भी होता है। जिस समुदाय का अध्ययन करना होता है उसका मुख्य सर्वे के पहले एक छोटे समूह में छोटे स्तर पर पूर्व सर्वेक्षण (Pilot Study) की जाती है तथा उनसे प्राप्त आंकड़ों के आधार पर उनका परीक्षण बड़े समूह पर सत्यापन करने के लिए करना होता है।

(5) **कार्य कारण संबंधों की जानकारी (Search for Casual Relationship)-** सामाजिक सर्वेक्षण का उद्देश्य सामाजिक घटनाओं के कारणों का पता लगाना होता है।

प्रतिदर्श सर्वेक्षण (Sample Survey) में प्रदत्त प्राप्त करने के लिए साक्षात्कार, साक्षात्कार अनुसूचियां प्रश्नावलियों आदि का उपयोग किया जाता है। साक्षात्कार के लिए पूछे जाने वाले प्रश्नों की सूची पहले बना ली जाती है। साक्षात्कार के लिए समय निश्चित कर लिया जाता है। सर्वे विधि में आंकड़े कई तरह से संगृहीत किये जाते हैं।

कभी-कभी ये सूचनाएं टेलीफोन की मदद से भी एकत्रित की जाती है। कभी-कभी चुने गये प्रतिदर्श (Sample) के सदस्यों से डाक द्वार भी प्रश्नावली भेजकर साथ में खाली लिफाफा भेजकर अध्ययनकर्ता जानकारी प्राप्त कर लेता है।

सर्वे विधि के गुण (Merits of Survey Method)

(1) इस विधि से बड़े समूह की जानकारी कम समय में एकत्रित की जा सकती है।

(2) यह विधि जनमत संग्रह की महत्वपूर्ण विधि है।

(3) सर्वेक्षण विधि मतदान संबंधी सही भविष्यवाणी के साथ-साथ सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक चरों के मध्य संबंध ज्ञात करने, उनके वितरण की संभावनाओं को बताने तथा उपकल्पना के सत्यापन में सशक्त भूमिका अदा करती है।

सर्वेक्षण विधि के दोष (Demerits of Survey Method)

उपर्युक्त गुणों के होते हुए भी कुछ ऐसी समस्याएं हैं जिनके कारण प्राप्त पूर्व कथनों पर अधिक विश्वास नहीं किया जा सकता। ये समस्याएं निम्न प्रकार हैं–

(1) सबसे बड़ी समस्या प्रतिदर्श चयन की है, क्योंकि पूर्ण जनसंख्या के मतों की जानकारी संभव नहीं होती। इसलिए जनसंख्या से प्रतिदर्श (Sample) को लेकर मतों की जानकारी प्राप्त कर भविष्यवाणी की जाती है।

(2) प्रतिदर्श में अधिकतर संभ्रांत और धनवान लोगों व पढ़े–लिखे लोगों का ही प्रतिनिधित्व हो पाता है और जनसमुदाय का प्रतिनिधित्व नहीं होता, फलस्वरूप भविष्वाणी सही नहीं होती।

(3) जानकारी सतही तौर पर ही प्राप्त होती है।

(4) प्रश्नावलियों का निर्माण प्रशासन से संबंधित है।

(5) जनसमुदाय द्वारा प्राप्त किये गये आंकड़ों को संख्यात्मक रूप देना मुश्किल होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सर्वेक्षण विधि के कई दोष व कठिनाइयां हैं जिसमें जनमत द्वारा प्राप्त परिणामों में विश्वास करना कठिन होता है। लेकिन इतना होते हुए भी जनमत संग्रह मतदान तथा सामाजिक समस्याओं संबंधी जानकारी तथा उनका विश्लेषण केवल सर्वेक्षण विधि द्वारा ही संभव है।

1.2.7 वैयक्तिक इतिहास विधि (Case Study Method)

वैयक्ति अध्ययन विधि मनोविज्ञान में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उपयोगी मानी जाती है, क्योंकि इसमें किसी व्यक्ति, व्यक्ति समूह अथवा किसी एक व्यक्ति समुदाय का पूर्ण अध्ययन किया जाता हैं संपूर्ण जीवन से तात्पर्य जीवन के व्यवहार, प्रतिमान तथा जीवन की क्रियाओं–प्रतिक्रियाओं के अर्न्तसंबंधों की जानकारी प्राप्त की जाती है। इस अध्ययन में विश्लेषण कर यह पता लगाने का प्रयास किया जाता है कि व्यक्ति के असामान्य व्यवहार का प्रमुख कारण क्या है?

पी.वी. यंग (P.V. Young, 1956) के अनुसार, 'वैयक्ति अध्ययन एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा एक सामाजिक इकाई चाहे वह व्यक्ति, एक परिवार, संस्था, संस्कृति, समूह या समस्त समुदाय हो, के जीवन का अन्वेषण तथा विश्लेषण किया जाता है।'

"Case study is method of exploring and analyzing the life of a social unit be that unit a person, institution, culture, group or even an entire community. Its aim is to determine the factors that account for the complex behavior patterns of the unit and the relationship of the unit to its surrounding milieu."

उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि इस अध्ययन पद्धति से तात्पर्य किसी एक विशेष सामाजिक इकाई का अध्ययन करके कार्य कारण संबंध को स्पष्ट करने का प्रयत्न करना है।

वैयक्ति अध्ययन विधि की विशेषताएं (Characteristics of Case Study Method)

वैयक्ति अध्ययन विधि की महत्वपूर्ण विशेषताएं निम्न प्रकार हैं-

(1) इस विधि से एक समय में केवल एक इकाई का अध्ययन किया जाता है। अध्ययन किया जाने वाला विषय कोई व्यक्ति या उसके जीवन की कोई घटना हो सकती है।
(2) इस अध्ययन विधि द्वारा किया जाने वाला अध्ययन अत्यधिक सूक्ष्म व गहन होता है।
(3) इस अध्ययन विधि द्वारा किसी एक इकाई के एक पहलू का ही अध्ययन नहीं करती बल्कि अध्ययन के समग्र पक्षों का सम्मिलित रूप से अध्ययन करना होता है।
(4) व्यक्ति-अध्ययन विधि की प्रकृति गुणात्मक होती हैं।
(5) इस विधि का उद्देश्य किसी इकाई की विभिन्न परिस्थितियों के बीच कार्य-कारण के संबंधों को ज्ञात करना है।
(6) यह विधि दीर्घकालीन है, अध्ययनकर्ता समय की चिंता किये बिना तब तक अध्ययन में लगा रहता है तब तक पूर्ण तथ्य न मिल जायें।

व्यक्ति-अध्ययन विधि के स्रोत व प्रविधियां (Tools and Techniques of Case Study Method)

(1) व्यक्ति से संबंधित प्राथमिक सूचनाएं व्यक्ति के मित्रों, पड़ोसियों, परिवार के सदस्यों आदि से संपर्क कर प्राप्त की जाती हैं।
(2) व्यक्ति की पारिवारिक पृष्ठभूमि की सूचनाओं का पता लगाया जाता हैं साथ ही साथ शिक्षा का स्तर व सांस्कृतिक विशेषताओं संबंधी सूचनाओं को भी एकत्रित किया जाता है।
(3) व्यक्ति के माता-पिता से उसके बचपन, रहन-सहन, शिक्षा, बीमारी, दुर्घटना, कोई विशेष घटना आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की जाती है।
(4) कुछ अन्य स्रोतों से भी व्यक्ति के बारे में सूचनाओं को प्राप्त किया जा सकता है। जैसे पुलिस, चिकित्सालय आदि से व्यक्ति के अभिलेख (Records) से भी महत्वपूर्ण जानकारी ली जा सकती है।
(5) डायरियां (Diaries), व्यक्तिगत डायरी बहुत अच्छा स्रोत माना जाता है। इसमें जीवन की गुप्त बातें भी लिखी होती है।

व्यक्ति अध्ययन विधि के गुण (Merits of Case Study Method)

व्यक्ति अध्ययन विधि के निम्नलिखित गुण हैं-

(1) इस विधि का नैदानिक क्षेत्र में बहुत महत्व है।
(2) यह विधि सूक्ष्म अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है।
(3) इस विधि में कई विधियों का प्रयोग किया जा सकता है। इससे सुविधा रहती है व विश्वसनीयता का स्तर बढ़ता है।

(4) इस विधि में व्यक्ति के अतीत के संदर्भ में अध्ययन किया जाता है।

(5) व्यक्ति का व्यवहार बहुत ही जटिल है अत: इसको समझने के लिए केवल इसकी विधियों पर निर्भर न रहकर इस विधि की सहायता ली जा सकती है। छोटी से छोटी इकाई आदि को समझने के लिए यह उपर्युक्त विधि है।

व्यक्ति-अध्ययन विधि की सीमाएं (Limitations of Case Study Method)

इस विधि के कई गुण होते हुए भी इसकी निम्न सीमाएं हैं-

(1) व्यक्ति अध्ययन विधि अवैज्ञानिक समझी जाती है, क्योंकि इस विधि में तथ्यों का संकलन करने पर किसी प्रकार का नियंत्रण नहीं रहता है जो एक निश्चित वैज्ञानिक विधि में होता है।

(2) इस विधि में अतीत की बातों, स्मृति को ध्यान में रखकर ही घटना का अध्ययन किया जाता है। यदि विषयी की स्मृति दोषपूर्ण है तो वास्तविक सूचनाएं नहीं मिल पातीं।

(3) इस विधि में समय व धन का अधिक व्यय होता है।

(4) इस विधि में अध्ययनकर्ता को पुनरावृति में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

(5) यह विधि मात्रात्मक न होकर गुणात्मक होने के कारण वस्तुपरक न होकर आत्मगत कहलाती है।

1.2.8 क्षेत्र अध्ययन विधि (Field Study Method)

फेस्टिंगर व काट्ज (1953) के अनुसार, 'क्षेत्र-अध्ययन के द्वारा सामाजिक प्रक्रमों का निरीक्षण और मापन उनके स्वाभाविक रूप में किया जाता है।'

"The field study is unique in enabling us to observe and measure social process in their natural occurrence."

— Festinger & Katz (1953), Research Methods in Behavioural Science

यह विधि एक व्रकसा कस अवलोकन है। सर्वेक्षण अनुसंधान व क्षेत्र अध्ययन दोनों अलग-अलग प्रकार के अनुसंधान है। स्पष्ट रूप से दोनों में अंतर क्षेत्र से है। सर्वेक्षण अनुसंधान में अध्ययन बड़ी समष्टि (Population) पर किये जाते हैं जबकि क्षेत्र अध्ययन एक छोटे समुदाय, एक छोटी संस्था, शैक्षणिक संस्थान के व्यक्तियों के व्यवहार का किया जाता है।

इस विधि में अनुसंधानकर्ता वास्तविक क्षेत्र में जाकर अपने प्रयोग से संबंधित व्यक्तियों का अध्ययन करता है व निर्धारित समस्या के समाधान खोजने का प्रयास करता है।

क्षेत्र अध्ययन के गुण (Merits of Field Studies)

इस विधि के गुण अथवा विशेषताएं निम्न प्रकार हैं-

(1) जैसा कि इस अध्ययन विधि में अनुसंधानकर्ता वास्तविक क्षेत्र में जाकर व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन करता है इसलिए यह विधि कृत्रिमता (Artificiality) के दोष से मुक्त होती है।

(2) इस विधि के अध्ययनों से प्राप्त परिणाम विश्वसनीय व वैज्ञानिक होते हैं।

(3) इस प्रकार के अध्ययन स्वाभावित परिस्थितियों में अधिक तत्परता से सही परिणाम देते हैं।

(4) क्षेत्र अध्ययन विधि का बहुधा प्रयोग संभव नहीं होता है।

(5) इस प्रकार की विधि में अनुसंधानकर्ता व्यक्ति के किसी प्रकार के सहयोग को मोहताज नहीं होता।

(6) इस विधि में अध्ययनकर्ता के पास निर्धारित समस्या होती है जिनके हल का समाधान खोजना होता है।

(7) इस विधि में सामाजिक व्यवहार से संबंधित चरों में कार्य–करण संबंध का अध्ययन (Cause Effect Relationship) तरीके से किया जा सकता है।

क्षेत्र अध्ययन की सीमाएं अथवा दोष (Limitations and Demerits of Field Studies)

उपर्युक्त विशेषताओं व गुणों के होते हुए भी क्षेत्र अध्ययन विधि दोषों से मुक्त नहीं है। इस अध्ययन की सामीएं हैं। ये निम्न प्रकार हैं–

(1) इस विधि में अनुभवी अनुसंधानकर्ता ही सही अध्ययन कर सकता है।

(2) इस विधि में सामाजिक व्यवहार से संबंधित चरों में कार्य–कारण संबंध का अध्ययन बहुधा अनुमान पर आधारित होते हैं।

(3) इस विधि में बहुत अधिाक समय व धन व्यय होता हैं

(4) इन अध्ययनों में सावधानी रखने के बावजूद इनसे प्राप्त परिणामा पूर्णरूप से वैज्ञानिक नहीं कहे जा सकते।

(5) इस विधि में अध्ययनकर्ता का कोई विशेष नियंत्रण न होने से परिणाम पूर्णरूपेण वैज्ञानिक नहीं होते।

उपर्युक्त दोष व सीमाएं होते हुए भी यह अध्ययन विधि सामाजिक विज्ञानों में बहुधा प्रयोग में लाई जाती है।

1.3 प्रयोगात्मक विधि (Experimental Method)

मनोविज्ञान मानव व्यवहार (human behavior) और अनुभव (experience) का क्रमबद्ध (systematic) और वैज्ञानिक अध्ययन (scientific study) करने के लिए कुछ विधियां (Methods) का प्रयोग करता है जिसमें प्रयोगात्मक विधि सर्वश्रेष्ठ है। सन् (1879) में प्रोफेसर विलहम बुन्ट (Villiam Wundt) ने जर्मनी के लिपजिग (Leipzig) विश्वविद्यालय (university) में पहली मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला की स्थापना की और प्रयोगात्मक विधि द्वारा चेतना अनुभूतियों

(conscious experience) का अध्ययन किया। मनोविज्ञान को विज्ञान का दर्जा दिलाने का श्रेय प्रयोगात्मक विधि को जाता है।

प्रयोग निरीक्षण (Obbservation) की उस दशा या शर्त (Condition) को कहा जाता है जिसे नियंत्रित (Control) और भिन्न (Varied) किया जा सकता है। प्रयोगात्मक विधि प्रयोग द्वारा क्रमबद्ध (systematic) और नियंत्रित अवस्था (Controlled condition) में मानव व्यवहारों एवं अनुभवों का विभिन्न परिस्थितियों में अध्ययन करता है। चरों (variables) के माध्यम यह अध्ययन किया जाता है। चर उन गुणों को कहा जाता है जिसका स्परूप (Nature) परिवर्तनशील होता है।

चर (variable) कई प्रकार के हो सकते हैं परन्तु मनोवैज्ञानिक प्रयोग में तीन तरह के चर प्रमुख हैं–

(i) स्वतंत्र चर (Independent Variable)
(ii) आश्रित चर (Dependent variable)
(iii) संगत चर (Relevant or extraneous variable)

(i) **स्वतंत्र चर (Independent Variable) :** से तात्पर्य वैसे चरों से है जो स्वतंत्र रूप से अपना प्रभाव दूसरे चरों पर डालते हैं। इसमें प्रयोगकर्ता हेर–फेर या जोड़–तोड़ द्वारा दूसरों चरों पर इनके प्रभाव का अध्ययन करता है।

(ii) **आश्रित चर (Dependent variable) :** से तात्पर्य वैसे चरों से है जो अन्य चरों पर आश्रित रहते हैं। प्रयोगकर्ता अन्य चरों का जोड़–तोड़ कर उनका प्रभाव आश्रित चरों पर देखता है।

(iii) **संगत चर या वहिरंग चर (Relevant or Extraneous variable) :** संगत चर या वहिरंग चर का तात्पर्य उन चरों से है जो प्रयोगकर्ता द्वारा नियंत्रित कर लिया जाता है क्योंकि वह इनका आश्रित चर पर प्रभाव का अध्ययन नहीं करना चाहता।

प्रयोग द्वारा प्रयोगकर्ता इन चरों के बीच संबंध का पता लगाकर स्वतंत्र और आश्रित चरों में भेद करता है। प्रयोग पूर्वनियोजित योजना के अनुसार किया जाता है। आज ज्यादातर अध्ययन प्रयोगात्मक विधि द्वारा ही किया जाता है और केवल उन्हीं अध्ययनों का मान्यता मिलती है जिनके तथ्यों के संगठन का आधार यह विधि होता है।

प्रयोगात्मक विधि के प्रमुख गुण निम्नलिखित हैं–

(1) **नियंत्रण (Control)–** प्रयोगात्मक विधि का यह गुण है कि वह चरो पर नियंत्रण कर सकता है। नियंत्रित अवस्था से तात्पर्य उन परिस्थितियों से है जो पूर्वकल्पना (hypothesis) के जांच को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए प्रयोगकर्ता द्वारा नियंत्रित कर लिए जाते हैं।

प्रयोगात्मक विधि में चूंकि अवस्था पूर्णत: नियंत्रित होती है इसलिए कारण–परिणाम संबंध (Cause effect relationship) सर्वोत्तम स्थापित होता है।

(2) **अलगाव (Isolation)–** अलगाव प्रयोगात्मक विधि का एक विशेष गुण है जिसके द्वारा प्रयोगकर्ता कुछ खास एवं निश्चित चरों का चयन कर उनका जोड़–तोड़ कर सकता है। चूंकि स्वतंत्र चर का अलग करने की सुविधा है और तब उनका आश्रित चर पर प्रभाव देखा जा सकता है इसलिए निरीक्षण ज्यादा स्पष्ट रूप से हो सकता है।

(3) **पुनरावृति (Reefation)–** प्रयोगात्मक विधि द्वारा किए गए अध्ययनों की पुनरावृति संभव है। अन्य मनोवैज्ञानिक जो किसी अध्ययनकर्ता द्वारा पाए गए निष्कर्ष की जांच करना चाहते हैं, वे उस अध्ययन के प्रतिवेदन (Report) से प्रयोगात्मक योजना (Experimental design) चरों (Variables) आदि को दुबारा देख कर उस अध्ययन को दुहरा कर अपनी शंका दूर कर सकते हैं। अर्थात प्राप्त निष्कर्ष को सत्यापित (Verify) कर सकते हैं।

(4) **वस्तुनिष्ठता (Objectivity)–** प्रयोगात्मक विधि में वस्तुनिष्ठता जैसा महत्वपूर्ण गुण है। प्रयोगकर्ता या प्रयोज्य के किसी प्रकार का पक्षपात (Experimenters bias or subject's bias) की संभावना बहुत कम होती है और इसलिए जो प्रदत्त (Data) प्राप्त होते हैं उन पर भरोसा किया जा सकता है।

(5) **गुणात्मक और परिणात्मक प्रदत्त (Qualitative and Quantitative data)–** प्रयोग द्वारा दोनों गुणात्मक और परिणात्मक प्रदत्त प्राप्त होते हैं जो मानव व्यवहार द्वारा ठोस निष्कर्ष निकालने में महत्वपूर्ण होते हैं।

(6) **सिद्धांत और नियम (theories and principles)–** प्रयोग की शुरूआत परिकल्पना (hypothesis) से और अंत सिद्धांत और नियमों के प्रतिपादन (Formulation) पर जा कर होती है। प्रयोग द्वारा प्राप्त प्रदत्त के विश्लेषण (Analysis of data) से नियमों एवं सिद्धांतों का जन्म होता है।

प्रयोगात्मक विधि द्वारा एक परिकल्पना (hypothesis) जिसकी उपयुक्त ढंग (Properly) जांच की गई है वह एक मजबूत सिद्धांत को जन्म देती है और जब इस सिद्धांत की आलोचना नहीं होती तब इसे नियम के रूप में अपना लिया जाता है।

अत: हम देखते हैं कि प्रयोगात्मक विधि द्वारा ठोस (Concrete) निष्पक्ष (Unpiased) एवं संक्षिप्त (Precise) अध्ययन संभव है और इस तरह यह एक सर्वाधिक वैज्ञानिक विधि है।

इतने गुणों के बावजूद अभी भी (yet) यह भी दोषमुक्त नहीं है। प्रयोगात्मक विधि के कुछ सीमाएं निम्नलिखित हैं–

(1) **अस्वाभाविकता (Unnaturalism)–** प्रयोग के दौरान प्रयोगशाला में प्रयोगकर्ता द्वारा हेर–फेर (Manipulation) कर कृत्रिम परिस्थितियों (artificial situations) में व्यवहार का अध्ययन किया जाता है जो बिल्कुल अस्वाभाविक होती है अत: इस प्रयोग द्वारा प्राप्त निष्कर्ष का सामान्यीकरण (generalization) वास्तविक (Real) परिस्थिति में मान्य नहीं होगी।

(2) **पूर्वाग्रह या पक्षपात (Bias)–** प्रयोगात्मक विधि में कई तरह के पक्षपात की संभावना होती है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इसमें प्रयोगकर्ता पूर्वाग्रह (Experimenters bias) प्रतिदर्श पूर्वाग्रह (Sampling bias) और प्रयोज्य पूर्वाग्रह (Subject bias) मुख्य हैं। प्रयोगकर्ता पूर्वाग्रह (Experimenter bias) से तात्पर्य यह है कि प्रयोग के संबंध में प्रयोगकर्ता की कुछ उम्मीदें (Expectalions) होती हैं जो उस प्रयोग के परिणाम को प्रभावित करती है।

प्रतिदर्श पूर्वाग्रह (Samplin bias) में देखा जाता है कि प्रयोगकर्ता जिस समूह या प्रतिदर्श (Sample) का चयन प्रयोग के लिए किया है वह जनसंख्या (Population) का सही प्रतिनिधित्व (Representative) नहीं है। अत: इस प्रतिदर्श से प्राप्त परिणाम में वैधता (Validily) एवं विश्वसनीयता (Reliability) नहीं है।

प्रयोज्य पूर्वाग्रह (Subjects' bias) से तात्पर्य है कि प्रयोज्य (subject) भी प्रयोगात्मक परिस्थिति में प्रयोगकर्ता (Experimenter) द्वारा दिए गए संकेतों से समझा जाता है कि प्रयोगकर्ता को उससे क्या उम्मीदें हैं और वह उसी के अनुरूप व्यवहार करता है।

यह भी देखा गया है कि प्रयोज्य (Subject) चूंकि जानता है कि उसके व्यवहार का निरीक्षण किया जा रहा है अत: वह अधिक सकारात्मक (Positive) रूप से व्यवहार करने लगता है जो कि वह आम परिस्थिति में न करता।

(3) **सीमित कार्य क्षेत्र (Limited Scope)–** प्रयोगात्मक विधि का कार्य क्षेत्र सीमित है क्योंकि ऐसे कई प्रयोग होते हैं जो कि मनुष्यों पर नहीं किए जा सकते और पशुओं पर किए गए अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष मनुष्यों पर लागू कर दिया जाता है जो त्रुटिपूर्ण (Erroneous) होता है।

(4) **सीमित उपयोग (Limited use)–** प्रयोगात्मक विधि का यह भी एक महत्वपूर्ण दोष है कि हर प्रकार की परिस्थितियों का प्रयोगशाला में सृजित (Creat) नहीं किया जा सकता।

इस प्रकार प्रयोगात्मक विधि के गुण एवं दोषों (Merits and demerits) का विश्लेषण करने के पश्चात हम कह सकते हैं कि यह विधि सबसे वैज्ञानिक विधि (Scientific method) है जो क्रमबद्ध (systematic) रूप से कार्य करती है और कुछ दोषों के बावजूद ठोस (Concrete) अध्ययन करने के लिए प्रयोग

की जाती है। प्रयोगात्मक विधि के उपयोग ने मनोविज्ञान की दशा एवं दिशा बदल दी है।

1.4 सर्वे विधि (Survey Method)

मनोविज्ञान के अन्तर्गत अनेकों ऐसी समस्याएं हैं जिनका सही ढंग से अध्ययनकर्ता छोटे प्रतिदर्श (Small sample) पर करना चाहें तो इसका ठीक एवं वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन नही ंकर पाता। व्यक्तियों की संख्या जिन्हें अध्ययन में शामिल किया जाता है प्रतिदर्श (sample) कहलाता है।

(Sample is a smaller representation of a larger whole)

ठस तरह की समस्याओं के लिए प्रतिदर्श (sample) का बड़ा होना तो आवश्यक है ही साथ ही साथ प्रतिदर्श का समाज के विभिन्न वर्गों से चुनाव करना भी अति आवश्यक है समाज में लोगों का बच्चों के पालन–पोषण के अभ्यास के प्रति मनोवृति (Attitude towards child-rearing practices) या दहेज के प्रति मनोवृति (attitude towards child-rearing practices) या दहेज के प्रति मनोवृति (attitude towards dowry) का अध्ययन, शादी से पहले होने वाले लैंगिक संबंधों (sexual relation before marriage) का अध्ययन, युवाओं में औषध के प्रयोग से संबंधित समस्याओं (Problems related drug addiction in youths) आदि के अध्ययन के लिए प्रतिदर्श का बड़ा होना (Larger sample) तथा समाज के सभी वर्गों से प्रतिनिधित्व (representation) होना अत्यंत आवश्यक है। उपर्युक्त विभिन्न प्रकार के समस्याओं के अध्ययन के लिए सर्वे विधि (Survey method) का प्रयोग मनोवैज्ञानिक द्वारा काफी प्रचलित है।

सर्वेविधि (Survey method) में आंकड़े (Data) निम्न चार विधियों द्वारा संग्रहित (Collect) किए जाते हैं–

(1) साक्षात्कार सर्वे (Interview survey)
(2) डाक सर्वे (Mail survey)
(3) टेलीफोन सर्वे (Telephone survey)
(4) पैनल सर्वे (Panel survey)

(1) **साक्षात्कार सर्वे (Interview survey)–** इस विधि द्वारा किसी समस्या के बारे में आंकड़े संग्रह करने (Data Collection) के लिए अध्ययनकर्ता प्रतिदर्श sample में सम्मिलित किए गए सभी व्यक्तियों का एक–एक कर बारी–बारी से साक्षात्का (Interview) लेता है। चूंकि साक्षात्कार लेने वाले एवं साक्षात्कार देने वाले के बीच आमने–सामने एक वार्तालाप है। (Interview is a face to face conference between the interviewee and interviewer) अत: साक्षात्कार के दौरान अध्ययनकर्ता समस्या से संबंधित कुछ प्रश्न प्रतिदर्श से पूछता है एवं दिए गए प्रश्नोत्तरों के आधार पर एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचता है।

(2) **डाक सर्वे (Mail survey)–** इस Survey में अध्ययनकर्ता प्रश्नों की एक सूची (List of questions) बनाकर एक पुस्तिका तैयार कर लेता है और इस पुस्तिका को अध्ययन में शामिल किये गए प्रत्येक व्यक्ति के डाक (Mailor post) द्वारा भेजता है। पुस्तिका प्राप्त होने के पश्चात इन व्यक्तियों को सभी प्रश्नों का सही सही उत्तर देने के बाद पुस्तिका को पुनः डाक द्वारा अध्ययनकर्ता को वापस भेजना होता है। प्राप्त response के आधार पर अध्ययनकर्ता किसी खास निष्कर्ष पर पहुंचता है। इस विधि द्वारा देश के कोने–कोने से विभिनन व्यक्तियों का समस्याओं से संबंधित विचार बहुत ही आसानी से प्राप्त कर लिया जाता है।

(3) **टेलीफोन सर्वे (Telephone survey)–** इस विधि द्वारा sample के प्रत्येक व्यक्ति का विचार जानने के लिए Telephone का सहारा लिया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति जिनको अध्ययन में सम्मिलित करना है उनको telephone करके समस्या से संबंधित प्रश्न पूछा जाता है और व्यक्ति उन प्रश्नों का जवाब telephone पर ही दे देता है। सभी जवाबों का विश्लेषण कर अध्ययनकर्ता निष्कर्ष पर पहुंचने का प्रयास करता है।

(4) पैनल सर्वे (Panel survey)– पैनल सर्वे में sample के एक ही व्यक्ति का कई बार interview लिया जाता है। यानी समस्या से संबंधित प्रश्नों को भिन्न–भिन्न समय अंतराल (time interval) देकर एक ही व्यक्ति से दो–तीन बार प्रश्न पूछे जाते हैं तथा प्राप्त response का विश्लेषण कर अध्ययनकर्ता एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचता है।

अन्य विधियों की तरह इस सर्वे विधि के कुछ भी कुछ गुण दोष निम्नलिखित हैं। जो उल्लेखनीय है–

गुण (Merits)

(i) इस विधि का प्रयोग बच्चों (Infants) पर नहीं किया जा सकता है।

(ii) इस विधि द्वारा प्राप्त निष्कर्ष को अधिक से अधिक व्यक्तियों के लिए सही माना जा सकता है क्योंकि इस विधि में समाज के सभी वर्गों को प्रतिदर्श (Sample) के रूप में सम्मिलित किया जाता है। यानी इस विधि में वाह्य वैधता (External Validity) का गुण पाया जाता है।

(iii) Panel Survey द्वारा data collection का एक फायदा यह होता है कि अध्ययनकर्ता को यह साफ–साफ पता चल जाता है कि वे कौन–कौन से factors है जो समस्या के प्रति व्यक्तियों के attitude (मनोवृति) में अंतर लाते हैं।

(iv) Telephone चूंकि सीमित लोगों के पास ही उपलबध है अत: Telephone survey का प्रयोग भी उन सीमित लोगों का ही किया जा सकता है जिनके पास (telephone) है।

उपर्युक्त दोषों के बावजूद भी Survey method मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रचलित विधि है।

1.5 कालानुक्रमिक विधि (Longitudinal Method)

Zanden (1989) ने अपनी पुस्तक Human development में Logitudinal method को परिभाषित करते हुए लिखा है– "The longitudinal method involves a research approach in which the scientist studies some individuals at different points in their lives, nothing the changes that occur in their behavior and characteristics overtime."

''यह एक ऐसी शोध विधि है जिसमें वैज्ञानिक व्यक्तियों के एक ही समूह का अध्ययन भिन्न–भिन्न समयों पर उनके व्यवहार एवं अन्य गुणों में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर करता है।''

उपर्युक्त परिभाषा से कालानुक्रमिक विधि (Longitudinal method) की मुख्य दो विशेषताएं स्पष्ट होती है जो निम्नलिखित हैं–

(i) इसमें व्यक्तियों के एक ही समूह का अध्ययन किया जाता है।

(ii) अध्ययन भिन्न–भिन्न समय अंतराल (time interval) के बाद बार–बार दोहराया (Repeat) जाता है।

एक अध्ययन कितना बार दोहराया जाएगा तथा एक से दूसरे अध्ययन के बीच का समय अंतराल (time internal) कितना होगा इसका कोई निश्चित नियम नहीं है। यह अध्ययनकर्ता के उद्देश्य के उपर निर्भर करता है। अध्ययनकर्ता समस्या के स्वरूप (Nature of problem) तथा अध्ययन के उद्देश्य (Purpose of study) को ध्यान में रखकर इसको तय (decide) करता है।

आजकल मनोविज्ञान में इस कालानुक्रमिक विधि (Longitudinal method) का प्रयोग काफी प्रचलित हो रहा है। इस विधि का सबसे अधिक प्रयोग वैसी परिस्थिति में किया जाता है जब अध्ययनकर्ता (Researcher) व्यक्तियों में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर एक तुलनात्मक अध्ययन (Comparative study) करना चाहता है।

इस विधि द्वारा Kagan & Moss (1962) ने एक अध्ययन किया जो काफी मशहूर है। Kagan & Moss ने अपने इस अध्ययन का नाम The birth to maturity रक्षा। इस अध्ययन में उन्होंने 71 बच्चों के व्यक्तित्व विकास (Personality development) का अध्ययन भिन्न–भिन्न समय अंतराल (different time interval) पर किया तथा अपने अध्ययन के आधार पर महत्वपूर्ण

निष्कर्ष दिया कि वयस्क उम्र (Adulthood) में व्यक्ति में पाए जाने वाले बहुत से शील गुणों (Traits) का विकास बचपन से ही विकसित होना प्रारंभ हो जाता है।

निम्नलिखित अन्य विधियों की भांति कालानुक्रमिक विधि के भी गुण–दोष उल्लेखनीय है–

गुण (Merits)

(i) इस विधि द्वारा व्यक्ति के व्यवहारों (Begavuiyr) मानसिक प्रक्रियाओं (Mental processes) में होने वाले क्रमिक परिवर्तनों (gradual changes) का क्रमबद्ध अध्ययन (Serial study) संभव होता है।

(ii) चूंकि इस अध्ययन में व्यक्ति के एक ही समूह का अध्ययन भिन्न–भिन्न समय अंतरालों में किया जाता है। अत: sample को similar एवं equivalent रखने संबंधी समस्या स्वत: समाप्त हो जाती है।

(iii) इस विधि में भिन्न–भिन्न व्यक्ति (different individual) के भिन्न–भिन्न विकासात्मक अवस्थाओं (different developmental stages) का अध्ययन किया जाता है। अत: इस विधि में कारण–परिणाम संबंध (Cause-effect relationship) का व्याख्या यथार्थ रूप से करने में काफी मदद मिलती है।

दोष (Demerits)– उपर्युक्त गुणों के बावजूद इस विधि के कुछ दोष भी हैं जो निम्नलिखित हैं–

(i) यह एक खर्चीली विधि है। तथा इसमें समय भी काफी लगता है।

(ii) चूंकि इस विधि का अध्ययन कई वर्षों तक चलता है अत: प्राय: ऐसा देखा गया है कि subject की संख्या धीरे–धीरे काफी कम हो जाती है अत: जब इसके परिणाम की वैधता (validity) की जांच की जाती है तो इसकी वैधता धीरे–धीरे काफी कम हो जाती है।

(iii) इस विधि द्वारा प्राप्त निष्कर्ष काफी विश्वसनीय (reliable) नहीं होता है क्योंकि इस विधि द्वारा जब अध्ययन भिन्न–भिन्न समय अंतराल में किया जाता है तब समय अंतराल के बीच के वातावरण को नियंत्रित (control) रख पाना काफी मुश्किल होता है।

(iv) अध्ययनकर्ता के लिए कभी–कभी यह निर्णय करना काफी मुश्किल हो जाता है कि आभित चर (Dependent variable) में जो अंतर आया है वह subject के age difference के चलते हैं या improved assessment (उन्नत मापन) के चलते।

उपर्युक्त दोषों के बावजू भी इस विधि का प्रयोग व्यक्ति के विकासात्मक समस्याओं (developmental problems) के अध्ययन में व्यापक तौर पर किया जाता है।

1.6 अनुप्रस्थ काट विधि (Cross Sectional Method)

इस विधि में भिन्न–भिन्न उम्र के विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तरों (different socio-economic status) के व्यक्ति का चयन (selection) कर कई समूह बनाया जाता है जिनका अध्ययन एक समय में एक साथ किया जाता है। यह विधि कालानुक्रमिक पिण्ि (longitudinal method) के ठीक विपरीत है। इस तरह इस विधि में एक (Cohort group) तैयार किया जाता है। Cohort group कर तात्पर्य वैसे समूह से लिया जाता है जिसमें समूह के सभी सदस्यों का जन्म एक साल या एक विशेष अवधि में हो। जैसे 1990 में जनमें सभी भारतीय (Indian) का एक समूह होना तथा 2005 में जन्में सभी भारतीय दूसरे समूह के होंगे।

"A research approach that selects and compares individuals of different ages at one time of testing is known as cross sectional design whereas a longitudinal study is a study in which there is a continued observation of the same subjects at various ages."

"Templin (1957) द्वारा किया गया एक अध्ययन जिसमें उन्होंने भिन्न–भिन्न उम्र (different age level) के बच्चों का चयन कर उसमें होने वाले भाषा विकास (Language development) का अध्ययन एक अच्छा उदाहरण है।

अनुप्रस्थ काट विधि के कई गुण दोष (demerits) हैं जो निम्नलिखित हैं–

गुण (Merits)

(i) इस विधि में काफी कम खर्च होता है क्योंकि इस विधि में अध्ययन एक ही बार पूरा हो जाता है।

(ii) इस विधि से अध्ययन करने में समय की काफी बचत होती है क्योंकि भिन्न–भिन्न समूहों का चयन कर एक ही बार में आंकड़ें संग्रह (Data Collection) कर लिए जाते हैं।

(iii) इस विधि से अध्ययन करने पर लम्बे समय तक (subject) के सहयोग की आवश्यकता नहीं होती तथा

(iv) इस विधि से अध्ययन करने पर प्राप्त आंकड़ें (Obtained data) को लम्बे समय तक रखने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

(v) इस विधि में (Reliability) सार्थकता तथा वैधता (Validity) है।

दोष (Demerits)

(i) इस विधि द्वारा अध्ययन करने में व्यक्तियों के समूहों में होने वाले परिवर्तन की दिशा यानी (direction of changes) का पता नहीं चलता क्योंकि अध्ययन (Longitudinal method) की तरह भिन्न–भिन्न समय अंतरालों पर नहीं करके एक ही समय मे ंकर लिया जाता है।

(ii) चुकि समूह भिन्न-भिन्ना स्तर होते हैं अतः उनका (Comparative study) आपस में तुलनात्मक अध्ययन करना।

(iii) इस विधि द्वारा संभव नहीं हो पता किसी एक व्यक्ति में होने वाले विकास का ठीक ढंग से नहीं किया जा सकता साथ ही साथ।

(iv) व्यवहारों में होने वाले परिवर्तनों का भी अध्ययन संभव नहीं है।

1.7 विकासात्मक विधि (Developmental Method)

विकासात्मक विधि के वर्णन से पहले यह आवश्यक है कि पाठकगण विकासात्मक शब्द के अर्थ को भली-भांति समझ लें। विकासात्मक शब्द से तात्पर्य है प्राणी का सर्वांगीण विकास तथा प्रत्येक अवस्था का विकास। अर्थात् विकासात्मक शब्द से यह स्पष्ट होता है कि प्राणी का सभी प्रकार का, शारीरिक, एवं मानसिक, शैक्षणिक, सांवेगिक, व्यक्तित्व विकास इत्यादि।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि विकासात्मक विधि व्यक्ति के सभी प्रकार के विकास क्रम का अध्ययन करने की एक विधि है। इस अर्थ में इसे केस विवरण विधि (Case History method) भी कहा जा सकता है।

इस विधि में मनोवैज्ञानिक सर्वप्रथम व्यक्ति से कुछ प्रारंभिक सूचनाएं जैसा उसका नाम, उम्र, यौन, शिक्षा, परिवार में सदस्यों की संख्या, बहन-भाईयों को संख्या, जन्म क्रम इत्यादि प्राप्त करता है।

इसके बाद मनोवैज्ञानिक गण उस व्यक्ति के गर्भाधारण से वर्तमान तक का इतिहास तैयार करते हैं। इसके अन्तर्गत गर्भाधान के समय से लेकर वर्तमान समय तक की विभिन्न शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक, शैक्षणिक विकास क्रम की जानकारी प्राप्त की जाती है। गर्भाधान के समय से होनेवाले विभिन्न प्रकार के विकास, जन्म के समय की स्थिति, उस समय हुई बीमारियाँ एवं उसका स्वरूप, तत्पश्चात जन्म के बाद की विभिन्न प्रकार की विकासात्मक अवस्थाएँ इत्यादि सबका एक विस्तृत विवरण तैयार किया जाता है।

इस प्रविधि में मनोवैज्ञानिक व्यक्ति के वर्तमान अवस्था के बारे में भी एक लेखा-जोखा तैयार करने हैं। इन सारी सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए वे विभिन्न प्रविधिों जैसे साक्षात्कार, प्रश्नावली, व्यक्तित्व परीक्षण इत्यादि का प्रयोग करते हैं, साथ ही, व्यक्ति के माता-पिता, भाई-बहन, सगे संबंधियों, पड़ोसियों, मित्रों इत्यादि से बात-चीत के माध्यम से भी अपनाते हैं।

अन्त में सभी साधनों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है और उसके विश्लेषण के आधार पर उसके विकास-क्रम को भी भली-भांति समझा जाता है।

इस अवधि की भी जन्म प्रविधिों की भाँति आलोचना की गई तथा इसके गुणों एवं दोषों को स्पष्ट किया गया। इस प्रविधि के प्रमख गुण निम्नांकित हैं:-

(i) इस विधि द्वारा व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक विकास क्रम को अच्छी तरह जाँचा जा सकता है।

(ii) इस विधि द्वारा व्यक्ति की उन विभिन्न अवस्थाओं का भी अध्ययन संभव होता है जिनका प्रभाव उसके शारिरिक एवं मानसिक विकास पर पड़ता है।

(iii) इस विधि द्वारा व्यक्ति की समस्याओं एवं उनके संभावित कारणों पर सीधा प्रकाश डालने का सुनहरा अवसर मनोवैज्ञानिकों को प्राप्त होता है।

(iv) इस विधि द्वारा चूंकि प्रत्येक व्यक्ति का सम्पूर्ण इतिहास जानकार उसके विकास क्रम की व्याख्या की जाती है अत: इस विधि द्वारा गहन अध्ययन संभव हो पाता है।

उपरोक्त गुणों के बावजूद इस विधि की कुछ कमियाँ भी हैं। इनमें निम्नांकित प्रमुख हैं–

(i) इस विधि में व्यवहारों के अध्ययन के लिए जो सूचनाएं प्राप्त की जाती है उन्हें सामान्यत: व्यक्ति के माता-पिता, मित्र सगे-संबंधियों इत्यादि से प्राप्त किया जाता है जिसकी सत्यता दोषपूर्ण होती है। कई बार यह देखा गया है कि इनके प्राप्त सूचनाएँ असत्य या बनावटी होती है जिससे पूरा अध्ययन दोषपूर्ण हो जाता है। असत्य सूचनाओं पर आधारित अध्ययन निर्भर योग्य नहीं रह जाता है।

(ii) व्यक्ति के इतिहास अथवा उसके विकास का जो विवरण किया जाता है उसकी सत्यता की जांच संभव नहीं है। अत: इस विधि में वैज्ञानिकता का अभाव पाया जाता है।

(iii) व्यक्ति के इतिहास की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना अपने आप में एक कठिन कार्य है। अत: इसके लिए आवश्यक है कि मनोवैज्ञानिक काफी प्रशिक्षित हों। प्रशिक्षित मनोविज्ञानिकों के अभाव में अध्ययन दोषपूर्ण हो जाता है तथा इसकी विश्वसनीयता घट जाती है।

(iv) इस विधि का एक दोष यह भी है कि यदि एक ही व्यक्ति के केस विवरण का विश्लेषण विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा किया जाता है तो उसमें एकरूपता की कमी पाई जाती है। इससे भी इसकी विश्वसनीयता प्रभावित होती है।

(v) इस विधि में वस्तुनिष्ठता की कमी पाई जाती है तथा आत्मनिष्ठता (Subjectivity) की सार्थकता।

इस प्रकार, विकासात्मक विधि में कई प्रकार के दोष पाए जाते हैं। परन्तु इन दोषों के बावजूद इस विधि की उपयोगिता एवं महत्व को नकारा नहीं जा सकता है।

1.8 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

1. प्रयोगात्मक विधि से आप क्या समझते हैं? इसके गुणों एवं सीमाओं की विवेचना करें।

   What do you understand by experimental method? Discuss its merits and limitations.

2. प्रयोगात्मक विधि की आलोचनात्मक व्याख्या करें।

   Critical evaluate experimental method.

3. सर्वे विधि क्या है? इसके विभिन्न प्रकारों की व्याख्या करें।

   What is survey method. Explain its different types.

4. कालानुक्रमिक विधि के गुण एवं दोषों की विवेचना करें।

   Discuss the merits and limitations of longitudinal method.

5. अनुप्रस्थ काट विधि से आप क्या समझते हैं? इसकी आलोचनात्मक व्याख्या करें।

   What do yo mean by cross-sectional method? Evaluate it critically.

6. विकासात्मक विधि की विवेचना करें।

   Discuss the developmental method.